Total No. of Questions – 4] [Total Pages : 3

(2022)

9367

M.A. Examination

SANSKRIT

(काव्यशास्त्रम्)

Paper–XI

(Semester-III)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : 1. नियमित छात्रों के अङ्क कोष्ठक के बाहर दिए गए हैं। प्राईवेट छात्रों के अङ्क कोष्ठक के अन्दर दिए गए हैं।

2. प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों के उत्तर एक ही स्थान पर हल करें।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** सन्दर्भों की व्याख्या करें।

(क) शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षायाऽभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।

(ख) मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।

(ग) विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्याभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावोरसः स्मृतः।।

(घ) अगूढमपरस्याङ्गं: वाच्यसिद्धयङ्गमस्फुटम्।
सन्दिग्धतुल्यप्राधान्ये काक्वाक्षिप्तमसुन्दरम्।।
व्यङ्गयमेवं गुणीभूतव्यङ्गयस्यापटौ भिदाः स्मृताः।

2×10=20 (2×12½=25)

2. मम्मट के मतानुसार काव्य लक्षण का विस्तारपूर्वक विवेचन करें।

अथवा

मम्मट के अनुसार आर्थी-व्यञ्जना पर प्रकाश डालें।

20(25)

3. लक्षणामूलक (अविवक्षित-वाच्य) ध्वनि काव्य का निरूपण करें।

अथवा

भट्टलोल्लट् शङ्क तथा भट्टनायक के रसविषयक मन्तव्यों का विवेचन करें। 20(25)

4. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखें :

(क) उत्तम काव्य।

(ख) उपादान-लक्षणा।

(ग) शान्तरस।

(घ) भाव-शान्ति तथा भावोदय ध्वनि।

2×10=20 (2×12½=25)